

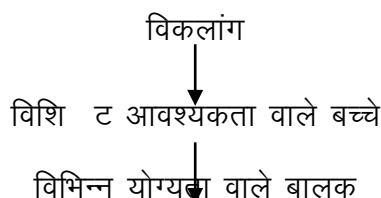
## इकाई-2 : विभिन्न योग्यता वाले बच्चे

### इकाई संरचना

- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 विभिन्न योग्यता वाले बच्चों की श्रेणियाँ
- 1.4 बौद्धिक क्षमता के आधार पर वर्गीकरण
- 1.5 अधिगम अक्षमता
- 1.6 अधिगम अक्षम बच्चों के सामान्य लक्षण
- 1.7 अधिगम अक्षमता हेतु चेकलिस्ट
- 1.8 अधिगम अक्षमता के संभावित कारण
- 1.9 अधिगम अक्षमता की नैदानिक जाँच
- 1.10 अधिगम अक्षमता के प्रकार
- 1.11 अन्य अधिगम अक्षमताएं
- 1.12 अध्यापन कार्य हेतु प्राविधियाँ
- 1.13 ध्यान योग्य बातें
- 1.14 स्टेकहोल्डर्स की भूमिका
- 1.15 बढ़ते कदम
- 1.16 स्वयं जाँचे
- 1.17 सारांश
- 1.18 संदर्भ ग्रंथ

**1.1 प्रस्तावना :-** बच्चे हमारा कल हैं। वे हमारा भविष्य हैं। उनकी अच्छी शिक्षा हमारे देश को प्रगति पथ पर नित नयी ऊँचाईयों तक लेजा सकती है। इन्हीं बातों को ध्यान में रख शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा प्राप्त हुआ है। शिक्षा का अधिकार, शिक्षा को, प्रत्येक बालक की पहुँच तक लाता है। शिक्षा के ही बदौलत प्रत्येक बालक अपनी क्षमता अनुसार अपने समाज को अपना योगदान दे सकता है। कोठारी आयोग से उद्धृत ये पंक्तियाँ – “भारत का भाग्य उसकी कक्षाओं में गढ़ा जा रहा है” हमारा ध्यान अपनी कक्षाओं की तरफ मोड़ती है। ये वही कक्षाएं हैं जहाँ विभिन्न जाति, धर्म, संस्कृति व योग्यता वाले बच्चे एक साथ अध्ययन करते हैं। इन कक्षाओं में हर एक बालक शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक योग्यताओं में समान नहीं होता। इनमें कुछ अत्यधिक योग्यता वाले, विलक्षण गुण वाले भी होते हैं तो कुछ साधारण योग्यता वाले व कुछ सामान्य से कम योग्यता वाले भी हो सकते हैं। कुछ ऐसे बच्चे भी हो सकते हैं जिन्हें कुछ विशिष्ट आवश्यकता हो। पूर्व में ऐसे सभी विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की हम पृथक् रूप से शिक्षण व्यवस्था करते थे। पर बदलते समय के साथ हम इन सभी विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को भी एक साथ बैठाकर, सामान्य वातावरण में सामान्य बच्चों के साथ ही शिक्षा प्रदान करते हैं। ऐसी शिक्षा व्यवस्था को भी हम एक विशेष नाम – “समावेशी शिक्षा” के नाम से पुकारते हैं। ऐसी शिक्षा व्यवस्था बच्चों को आपस में मिल-जुल कर रहने, परानुभूति व एक दुसरे के साथ

सहयोग करने पर बल देती है। परन्तु पूर्व में ऐसा संभव नहीं हो पा रहा था। गुजरे जमाने में ऐसे बच्चों को हीन दुर्घटना से देखा जाता था। उनके साथ कभी-कभी दुर्व्यवहार भी हो जाता था। हद तो तब हो जाती थी जब हम ऐसे बच्चे जो कि आरिरिक मानसिक या संवेगात्मक रूप से अक्षम होते थे या कुछ कमी रखते थे उन्हें हम विकलांग या पागल के नाम से संबोधित करते थे। पर समय के साथ लोगों के विचारों में बदलाव देखने को मिला और इसके साथ ही ऐसी आवाली में भी परिवर्तन देखने को मिला



वर्तमान समय में प्रयुक्त की जाने वाली आवाली 'विभिन्न योग्यता वाले बच्चे' ज्यादा बेहतर प्रतीत होती है। इसके पीछे महत्वपूर्ण तर्क यह है कि कोई भी बच्चा विकलांग या किसी कार्य को करने में पूर्ण रूप से अक्षम कभी नहीं होता, वैसे भी कहा जाता है कि जब ईश्वर एक योग्यता लेता है तो उसे दूसरी योग्यता दे देता है। कुछ इसी तरह इन बच्चों के पास अगर एक कमी है, तो उसके बदले इनके पास दूसरी कोई ऐसी योग्यता/गुण होगी है जो कि सामान्य बच्चे में नहीं होगी, या ऐसे बच्चे किसी एक विधा में सामान्य बालकों की तुलना में कहीं बेहतर होंगे उदाहरणस्वरूप संगीतकार – रवीन्द्र जैन, सुधा चन्द्रन, अरुणिमा सिन्हा, गिरीश कार्मा इत्यादि।

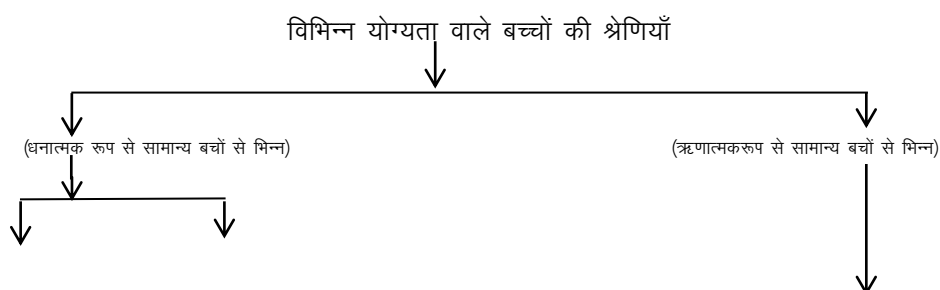
यही वजह है कि वर्तमान में ऐसे सभी बच्चों के लिये हम 'विशिष्ट योग्यता वाले बच्चे' आवाली का प्रयोग करते हैं। ये विशिष्ट योग्यता वाले बच्चे सामान्य बच्चों से भिन्न होते हैं। ऐसे बच्चे धनात्मक या ऋणात्मक रूप से भिन्न हो सकते हैं। धनात्मक रूप से भिन्न बच्चे सामान्य बच्चों से कहीं अधिक योग्यता वाले होते हैं जबकि ऋणात्मक रूप से भिन्न बच्चे सामान्य बच्चों से कहीं विशिष्ट क्षेत्रों में, कम योग्यता वाले होते हैं। इसलिए इन सभी बच्चों की कुछ विशिष्ट आवश्यकताएं होती हैं।

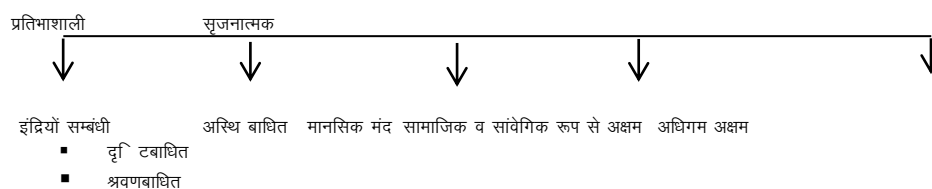
## 1.2 उद्देश्य :-

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत आप :

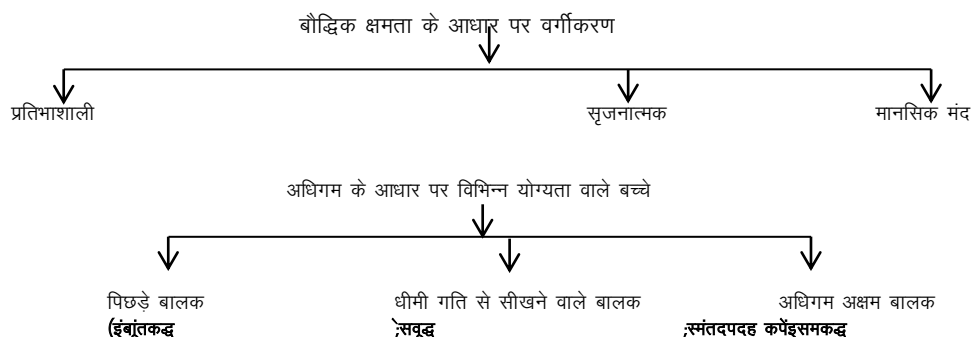
- अधिगम अक्षमता को परिभाषित कर सकेंगे।
- अधिगम अक्षमता के प्रकारों में भेद कर सकेंगे।
- अधिगम अक्षमता के संभावित कारण बता सकेंगे।
- अधिगम अक्षम बच्चों की विशेषताएं बता सकेंगे।
- विभिन्न परीक्षणों द्वारा अधिगम अक्षमता की जाँच कर सकेंगे।
- अधिगम अक्षम बच्चों के प्रति सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार की पैरवी कर सकेंगे।

## 1.3





1.4



### 1.5 अधिगम अक्षमता :-

अधिगम को आमतौर पर अंग्रेजी के तीन तत्त्वों (त) का अत्यधिक महत्व है। सही मायनों में देखा जाये तो किसी भी व्यक्ति के साक्षर होने में इन तीन आर (त) का विशेष महत्व है और यह तीन आर ही किसी भी व्यक्ति को सही मायनों में अधिगम कराते है। इसलिये इन्हीं तीन (त) से संबंधित कुछ अधिगम अक्षमता के बारे में हम जानने की कोशिश करेंगे।

**‘अधिगम अक्षमता’ का तात्त्विक अर्थ** – यह शब्द सर्वप्रथम 1963 में सैम्युल किर्क द्वारा इस्तेमाल किया गया था। किर्क के मुताबिक “अधिगम अक्षमता का तात्पर्य भाषा, पठन, लेखन, वाक् या अंकगणितीय क्षमताओं में एक या एक से अधिक प्रक्रियाओं में मंदता अथवा अवरुद्ध विकास है जो संभवतः मस्तिष्क कार्य विरूपता और/अथवा संवेगात्मक/व्यवहारिक विक्षोभ का परिणाम है न कि मानसिक मंदता, संवेदी अक्षमता सांस्कृतिक या अनुदेशन कारक के कारण”।

वर्ष 1994 में अमेरिका में अधिगम अक्षमता की राष्ट्रीय संयुक्त समिति का गठन हुआ जिसमें अधिगम अक्षमता को निम्नलिखित तरीके से परिभाषित किया : “ अधिगम अक्षमता एक सामान्य शब्द है जो सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने, तर्क करने, या गणितीय क्षमता में कठिनाई सरीखे विभिन्न समूह विकृति को दर्शाते है।” ये विकृतियाँ आंतरिक हैं जो अनुमानतः केन्द्रिय तंत्रिका के सुचारु रूप से कार्य नहीं करने के कारण होती है व यह जीवन के किसी क्षण में हो सकता है।

### सूचक तत्व :-

उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण के पश्चात् हम कह सकते हैं कि अधिगम अक्षमता के निम्नलिखित सूचक तत्व हैं :-

- ❖ क्लेनिडबजपवदपदह विबमदजतंस छमतअवने लेजमउ/ केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र की कार्यात्मक विरूपता।
- ❖ क्पापिबनसजपमे पद समंतदपदह बंकमउपब जमेजे/ अकादामिक या शैक्षणिक कार्यों को सीखने संबंधी कठिनाइयाँ।
- ❖ क्पेबतमचंदबल इमजूममद चवजमदजपंस दक बीपमअमउमदज क्षमता व उपलब्धि में विफलता।

- **केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र की कार्यात्मक विरूपता**—अधिगम की उत्पत्ति मस्तिष्क में होती है इसलिये अगर केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र सुचारु रूप से कार्य नहीं कर पाता तो इसका प्रभाव अधिगम पर विरूपित होने के कारण बालक अधिगम अक्षमता से ग्रस्त हो सकता है। कई अनुसंधानों के परिणाम भी इस बात की पुष्टि कर चुके हैं। लेकिन शिक्षण—अधिगम के दृष्टिकोण से एक शिक्षक को इसका व्यावहारिक एवं शैक्षिक पक्ष का अध्ययन अधिक महत्वपूर्ण है।
- **अकादमिक या शैक्षणिक कार्यों को सीखने संबंधी कठिनाइयाँ**— अधिगम अक्षमता की फेडरल परिभाषा में ऐसे सात अकादमिक योग्यताओं का जिक्र मिलता है। जिनमें अधिगम अक्षमता का पता लगाया जा सकता है। ये सात योग्यताएँ निम्नलिखित हैं:— वाक्, पठन, लेखन, अंकगणित, बोलना, चिंतन व तर्कशक्ति हैंचूँकि ये सारी योग्यताएँ/क्षमताएँ/अकादमिक/शैक्षणिक कार्य से संबंधित हैं तो जाहिर सी बात है कि इनकी अनुपस्थिति में बालक को अकादमिक कार्यों को करने में कठिनाई जाएगी।
- **क्षमता व उपलब्धि में विभेद**—ऐसे बालकों की अधिगम क्षमता और उनकी वास्तविक उपलब्धि में खासा अंतर देखने को मिलता है। ऐसे बालकों में उनकी क्षमता व उनकी उपलब्धि में भारी विसंगति देखने को मिलती है। पर ऐसे नतीजे पर पहुँचने से पहले जरूरी होगा कि हम किसी बुद्धि परीक्षण या किसी चिकित्सकीय जाँच के द्वारा बालक की सही क्षमता का आँकलन कर लें। ताकि हम सही निर्णय ले पाने में सक्षम हों।

### 1.6 अधिगम अक्षम बच्चों के सामान्य लक्षण



1. बालक की क्षमता एवं उपलब्धि के बीच गंभीर अंतर का होना।
2. शैक्षणिक उपलब्धि निम्न स्तर की होना।
3. ऐसे बालक सामान्य बौद्धिक क्षमता के बावजूद शैक्षणिक पिछड़ेपन के लक्षणों का प्रदर्शन करते हैं।
4. ऐसे बच्चों में दृश्य प्रत्यक्षीकरण की कमी देखने को मिलती है।
5. ऐसे बच्चों में तार्किक क्षमता की कमी देखने को मिलती है।
6. ऐसे बच्चों में शैक्षणिक कौशलों एवं उनके निष्पादन में कमी दिखलायी देती है।
7. ध्यान अवधि में कमी—आमतौर पर ऐसे बालकों का ध्यान किसी एक चीज पर ज्यादा देर केन्द्रित नहीं रहता।
8. अति सक्रियता भी ऐसे बच्चों का एक सामान्य सा लक्षण है।
9. सामान्य अकुशलता भी ऐसे बच्चों का एक आम लक्षण है।
10. सामान्य ज्ञान की कमी।
11. ध्यानपूर्वक बातों को सुनने व उनको ग्रहण करने में कमी।
12. सूचनाओं को संकलित व संगठित करने में कमी।
13. ऐसे बच्चों की बुद्धिलब्धी आमतौर पर औसत या उससे अधिक होगी — अर्थात् यह कहना की कम बुद्धिलब्धी के कारण उनमें यह अक्षमता है गलत होगा।

### 1.7 अधिगम अक्षम बालकों की पहचान हेतु चेक लिस्ट

1. क्या आपके बच्चे को शब्दों को पहचानने में अक्सर परेशानी होती है। — हाँ/नहीं
2. आपका बच्चा अक्सर सुने हुए शब्दों का गलत उच्चारण करता है। — हाँ/नहीं
3. क्या आपका बच्चा शब्दों में अक्षरों के स्थान को अदल-बदल देता है। — हाँ/नहीं
4. क्या आपके बच्चे के पास सीमित शब्द भंडार है। — हाँ/नहीं
5. क्या आपका बच्चा लगातार किसी चीज पर ध्यान केन्द्रित कर पाता है? — हाँ/नहीं
6. क्या आपका बच्चा अक्सर दिशाओं को पहचानने में गलती करता है। — हाँ/नहीं
7. क्या वह अक्सर पढ़ने से जी चुराता है। — हाँ/नहीं
8. क्या बच्चा अपना कार्य संगठित करने में कठिनाई महसूस करता है। — हाँ/नहीं
9. थोड़ा सा भी व्यवधान उसका ध्यान भंग कर देता है। — हाँ/नहीं
10. प्रश्नों के उत्तर देने में उसे अधिक समय लगता है। — हाँ/नहीं
11. वाक्यों को पढ़ने में अक्सर विराम चिह्नों को भूल जाता है। — हाँ/नहीं
12. पढ़ते वक्त पंक्तियाँ या शब्दों को छोड़कर पढ़ता है। — हाँ/नहीं
13. बहुत तेज या बहुत धीमा पढ़ता है। — हाँ/नहीं
14. मौखिक निर्देशों को सही-सही याद नहीं रख पाता है। — हाँ/नहीं

यदि उपरोक्त कथनों में अधिकतर उत्तर हाँ में है तो सावधान हो जाइये क्यों की आपका बच्चा अधिगम अक्षम हो सकता है।

### 1.8 अधिगम अक्षमता के संभावित कारण

- ❖ **वंशानुगत कारण** :—अधिगम अक्षमता से संबंधित विभिन्न शोध इस बात की पुष्टि करते हैं कि अधिगम अक्षमता अनुवांशिक है। खासकर पठन संबंधी अक्षमता के मामले में यह बात अक्षरशः सत्य पायी गयी। अर्थात् हम कह सकते हैं कि अगर परिवार में कोई व्यक्ति अधिगम अक्षम है तो बहुत संभव है कि अक्षमता उसके पूर्वजों में भी रही हो, फलस्वरूप अब वो इस बच्चे में दिखाई दे रही है।
- ❖ **वातावरणीय कारण** :—वातावरणीय कारण को हम निम्न भागों में विभाजित कर सकते हैं —
  - क्षमदंजस दृ जन्म से पहले जब बच्चा माँ के गर्भ में रहता है ।
  - छजंसदृ जन्म के समय
  - च्वेजदंजस दृ जन्म के पश्चात्
 उपरोक्त कारणों में हम निम्नलिखित कारकों को जैसे—गर्भावस्था के दौरान ऑक्सीजन की कमी, माँ के द्वारा त्राब व अन्य हानिकारक ड्रग्स व दवाइयों का सेवन या जन्म के वक्त बच्चे के मस्तिष्क पर चोट आ जाना, 'फारसेप बेबी' इत्यादि को रख सकते हैं जो कि अधिगम अक्षमता को जन्म देते हैं।
- ❖ **जैविक कारण** :—ऐसे सभी कारण जिनमें केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र मुख्य भूमिका निभाती है, जैसे विभिन्न शारीरिक क्रियाएँ, मेटाबोलिज्म इत्यादि केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र से संचालित होती है। विभिन्न कारणों के द्वारा जब तंत्रिका तंत्र विरूपित कार्य करने लगता है तो भी कई बार अधिगम अक्षमता जन्म लेती है। इन्हीं कारणोंको जैविक कारणों के नाम से जाना जाता है।

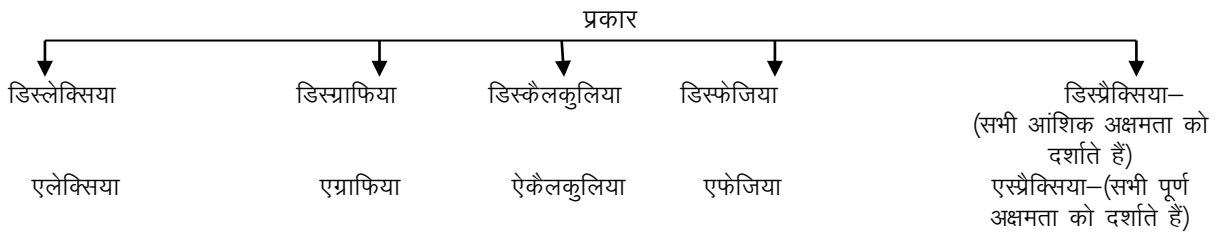
### 1.9 अधिगम अक्षमता की नैदानिक जाँच

अक्सर अभिभावक व शिक्षकगण ऐसे बालकों की वास्तविकता जानने में परेशानी महसूस करते हैं, उन्हें लगता है बालक पढ़ना नहीं चाहता इसलिये वह ऐसे ( न पढ़ने के) बहाने बना रहा है। वो उसको

अधिगम में आने वाली परेशानियों का सही सही आँकलन कर पाने में कठिनाई महसूस करते हैं। इन्हीं परेशानियों के निदान हेतु निम्नलिखित परीक्षण सहायक सिद्ध हो सकते हैं—

- स्टेनफोर्ड – बिने इंटेलीजेंस स्केल
- पी-बॉडी पिक्चर परीक्षण
- डयुरैल्स परीक्षण— (डयुरैल्स ऐनालिसिस ऑफ रीडिंग डिफाल्ट)
- इलिनायस टेस्ट फॉर साइकालाजिस्टिक एबिलिटीज।
- विनलैंड सोशल मैच्युरिटी स्केल/मापनी।
- गेट्स एवं मैक किलोप द्वारा निर्मित— रीडिंग डाइग्नॉस्टिक परीक्षण।
- स्वरूप एवं मेहता द्वारा निर्मित रीडिंग डायग्नॉस्टिक टेस्ट।
- स्वरूप एवं मेहता द्वारा निर्मित थिंकिंग स्ट्रेटजीस टेस्ट। इत्यादि।

### 1.10 अधिगम अक्षमता के प्रकार



क्रं.	बालक	क्षेत्र जहाँ परेशानी महसूस होती है।	उदाहरण
1	क्लेसमगपब	भा ा संबंधी	शब्दों व अक्षरों को पहचानने व उनके इस्तेमाल में परेशानी।
2	क्लेहतंचीपब	लिखित अभिव्यक्ति लेखन संबंधी	लिखने में त्रुटि करना।
3	क्लेबंसबनसपब	गणितीय कौशल	नंबर के जोड़ने, घटाने में, पहाड़ा याद रखने में।
4	क्लेचतंगपब	फाइन मोटर स्किल्स/सूक्ष्म गामक कौशल	बटन लगाने, जूते की लेस बाँधना जैसे कार्य। इत्यादि
5	क्लेचींपब	वाक् /बोलने संबंधी	मौखिक अभिव्यक्ति में परेशानी

❖ **क्लेसमगपं धपठन कौशल अक्षमता** :—माना जाता है कि सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग एक नेत्र रोग विशेषज्ञ रुडोल्फ बर्लिन द्वारा किया गया था। कभी-कभी इसे 'शब्द अंधता' (वक्त ठसपदकदमे) भी कहा जाता है। यह सबसे आम अक्षमता है। लगभग 80 : से ज्यादा अधिगम अक्षम बालकों में इस प्रकार की अक्षमता पायी जाती है। ऐसे बालकों में पढ़ने संबंधी कौशलों में त्रुटि पायी जाती है। ऐसे बच्चे प्रायः रुक-रुक कर पढ़ते हैं, पढ़ते समय अटकते हैं, अक्सर अक्षरों को गलत पढ़ लेते हैं, शब्दों या अक्षरों में हेर फेर कर देते हैं, उनके स्थान को अदल-बदल कर पढ़ लेते हैं इत्यादि। ऐसे बालक जो की पठन अक्षमता से ग्रसित होते हैं उनमें निम्न लक्षण देखने को मिलेंगे।



### ➤ सामान्य लक्षण –

- सामान्यतः औसत या औसत से अधिक बुद्धिलब्धि पायी जाती है।
- दृष्टि व श्रवण क्षमता में कोई दोष नहीं पाया जाता।
- उपलब्धि आमतौर पर कमजोर होती है।
- औसत बालक की अपेक्षा पढ़ने लिखने में कमजोर होते हैं।
- देखने में सामान्य बालकों की तरह ही होते हैं। सिर्फ पठन संबंधी दिक्कत महसूस करते हैं।
- मौखिक भाषा क्षमता एक बारगी सामान्य हो सकती है परन्तु लिखित भाषा का जांच परीक्षाओं में उनका प्रदर्शन काफी कमजोर रहता है।

### ➤ पढ़ने एवं वर्तनी (व्यंजनसंपद) संबंधी विशेषताएँ –

- ऐसे बालकों में एकाग्रता में भारी कमी देखने को मिलती है।
- ध्वनियों को पहचानने में कठिनाई होती है।
- अधिगम एकरूपता का अभाव होता है।
- वर्णों व शब्दों को पहचानने व उनके इस्तेमाल में दिक्कत महसूस करते हैं।
- शब्दों में कमी पायी जाती है।
- कमजोर याददाशत के चलते रणनीति बनाने में अक्षम ....।
- समान उच्चारण वाली ध्वनियों को पहचानने में दिक्कत महसूस होती है। उदाहरणार्थ 'कपेबतमज' और 'कपेबतमजम'
- ककपजपवद जोड़ना:- शब्दों व ध्वनियों को पढ़ते वक्त उनमें अधिक अक्षर वर्ण को जोड़ना उदाहरणार्थ— 'ज' की जगह 'जीज'
- नइजपजनजपवद:- शब्दों व ध्वनियों को पढ़ते वक्त एक वर्ण को दूसरे से बदल देना। उदाहरणार्थ—जजकी जगह ठनज पढ़ना यहां बालक 'छ' की जगह 'ठ' से बदल रहा है।
- व्यंजनसंपद/हटाना:- शब्दों व ध्वनियों को पढ़ते वक्त एक – दो वर्ण या स्वरों को छोड़ देना। उदाहरण: 'समोसा' के बदले 'मोसा' पढ़ना।
- शब्दों, वर्णों व ध्वनियों के स्थान को परिवर्तित करके पढ़ना। उदाहरणार्थ—छक् को छक् पढ़ना छक् को छप्पढ़नाइत्यादि।
- ऐसे बच्चे बोलते वक्त अक्सर अटक-अटक कर बोलते हैं।
- ऐसे बच्चे बोलते वक्त हकलाते हैं।
- ऐसे बच्चे की आमतौर पर वाक् दर और तारतम्यता प्रभावित रहती है। (शब्दों को अनियंत्रित दर से बोलना, कभी बहुत जल्दी-जल्दी, कभी बहुत धीरे-धीरे) तारतम्यता अर्थात् लय में एकरूपता का न होना।

#### बेमबा लवनत चतवहतमे/अपनी प्रगति जाँचे

सुशांत कक्षा तीसरी का विद्यार्थी है, पर वह छोटी-छोटी, नर्सरी की कविताओं जैसे "चंदामामा", व "जॉनी-जॉनी" को भी याद नहीं रख पाता। इस वजह से उसे कक्षा में निर्मिन्दगी उठानी पड़ती है। सभी साथी उसका मजाक उड़ाते हैं। इस बात से दुःखी होकर वह अकामक हो जाता है। एक शिक्षक के नाते आप सुशांत की कैसे मदद कर सकते हैं ?

- ❖ क्लब्सबनसप/गणितीय कौशल संबंधी/अक्षमता—यह अक्षमता बच्चों के गणितीय कौशल से संबंधित है। ऐसे बच्चे गणित के सीधे, सरल सवालों को हल करने में भी कठिनाई महसूस करते हैं। घटाने, जोड़ने संबंधी सवाल में भी ऐसे बालक गलती कर बैठते हैं।

सामान्य त्रुटियाँ :-

- एकपजपवदरू.

$$\begin{array}{r} 5 \\ + 6 \\ \hline 11 \end{array}$$

- नइजतंबजपवद रू

$$\begin{array}{r} 92 \\ - 54 \\ \hline 42 \end{array}$$



- हासिल कीये का प्रत्यय उन्हें परेशान करता है। और वह आमतौर पर इसमें गलती करते हैं। उपरोक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो रहा है।
- डनसजपचसपबंजपवद :

$$\begin{array}{r} 55 \\ \times 25 \\ \hline 2525 \\ 1010 \\ \hline 3535 \end{array}$$

- ऐसे बालक गणितीय संप्रत्यय (गणित के संप्रत्ययों) जैसे —लउइवस (संकेत),पहद ;चिन्हद्वएछनउइमत कपहपज;अंकद्व को पहचानने में अक्सर (3) गलती कर देते हैं।
- गणित के साधारण से सवाल उन्हें उलझा देते हैं।
- वे गणित के समीकरण, उनका क्रमवार हल कर पाने में असमर्थ होते हैं।
- उन्हें गणित के संदर्भ में दिशा, अंको, ईकाइयों को समझने तथा उन पर आधारित सवालों को हल करने में खासी दिक्कत होती है।
- कभी-कभी वे दायें और बायें के अन्तर को समझ पाने में भी असमर्थ होते हैं।

उपचारात्मक गतिविधियाँ :-

- ऐसे बच्चों को सही उपचार देने के लिए जरूरी है कि हम उनकी समस्या की सबसे पहले सही जाँच करें। सही जाँच हेतु हम उपलब्ध मानक निदानात्मक परीक्षणों का इस्तेमाल कर सकते हैं।
- ऐसे बच्चों को पढ़ाते वक्त या गणितीय प्रत्ययों को समझाते वक्त हमें उन्हें एक समय में एक ही संक्षिप्त व स्पष्ट प्रत्यय को लेकर अथपूर्ण तरीके से उदाहरण के साथ बताना चाहिए। ताकि बालक के मस्तिष्क में वह प्रत्यय पैठ कर जाये।
- मूल तत्व व सिद्धांतों को बतलाते वक्त सावधानी बरतनी चाहिए। उन तत्वों व सिद्धांतों को समझाते वक्त स्पष्ट उदाहरणों का प्रयोग करें ताकि बालक को उसे ग्रहण करने में आसानी हो।
- इस तकनीक के युग में हम चाहें तो ऐसे बालकों को पढ़ाने के लिए विशिष्ट उपकरणसमेअभिक्रमित अधिगम सामग्रीव कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन का सहारा भी ले सकते हैं।
- ऐसे बच्चों को (इंजने) अबैकस का इस्तेमाल करने देना भी फायदेमंद होता है।



- वर्कशीट (एक गिट में कक्षा या गृहकार्य हेतु सवाल जवाब देना, ताकि बच्चे, उनके अभिभावक व शिक्षक बच्चे की गलतियों को स्पष्ट रूप से जान सकें व उनके उपचार हेतु प्रयत्न कर सकें) का इस्तेमाल, ऐसे बालकों की गणितीय त्रुटियों को नियंत्रित करता है। साथ ही शिक्षक को बच्चों के स्तर का सही मूल्यांकन, निदान व उपचार देने में भी सहायक है।
- शिक्षकों व अभिभावक को ऐसे छात्रों का नियमित रूप से, अनेक विधियों द्वारा, आंकलन करना चाहिए ताकि ऐसे छात्रों की समस्याओं का वक्त रहते निदान हो सके।



fMLdSydwfyd cPps ds fy, fdz;k@Activity

vxj vki dh d{kk esa dksbZ fMLdSydqfyd  
cPPkk gS rks mijksDr fp= dh gh rjg vki vU;  
mnkgj.kksa dk iz;ksx dj ldrs gSA mijksDr  
fp= esa vki ,sls v{ke cPpkksa dks fofHkUUk  
vkd`fr;ksa ½tSls& xksy] f=Hkqt] yEckdkj]  
pkSdksj bR;kfn½ dks bafxr djus dg ldrs gSA

#### बेमबा लवनत चतवहतमे/अपनी प्रगति जाँचे

नंद गणित में बहुत कमजोर है। वह गणित से बहुत डरता है, व हर वक्त उससे जी चुराना चाहता है। उसे गणित की संख्या, संकेत सभी परेशान करते हैं। वो "32" को "23" समझ के पढ़ता है। वह कभी-कभी गणित के सवालों को देख रोने लगता है। गणित में उसका प्रदर्शन लगातार गिर रहा है।

- क्या नंद अधिगम अक्षमता से पीड़ित है?
- वह किस प्रकार की अक्षमता से ग्रसित है?

#### ❖ क्लेहतंचीपं/लेखन संबंधी अक्षमता

लिखते या लेखन संबंधी समस्या को तकनीकी तौर पर डिस्ग्राफिया के नाम से संबोधित करते हैं। इस समस्या से ग्रसित बच्चों को लिखने में या लिखित अभिव्यक्ति में कठिनाई होती है। ऐसा छात्र लिखने में विभिन्न प्रकार की गलतियाँ करता है। ऐसे बच्चे सामान्य बुद्धि-लब्धि के होते हैं व किसी भी प्रकार के मनोरोग समस्या से पीड़ित न होते हुए भी लिखने में खासी दिक्कतों का सामना करते हैं। उनकी लिखित अभिव्यक्ति अनेक त्रुटियों से परिपूर्ण रहती है। ऐसे छात्रों की इस प्रकार की त्रुटियाँ छात्रों में हीन भावना को विकसित करती हैं उनके आत्मविश्वास को भी घटाती हैं साथ ही उनकी अकादमिक उपलब्धि को भी कम करती है। लिखने संबंधी विकार अनेक कारणों से हो सकते हैं पर ऐसे सभी बच्चों को हम अधिगम अक्षम छात्र की श्रेणी में नहीं रख सकते।

#### सामान्य लक्षण –

- ऐसे छात्र अक्सर अक्षरों/वर्णों को पहचानने में त्रुटि करते हैं।  
उदा.- 'इ' की जगह 'क' लिखना।  
'च' को 'ु' समझ लेना।

'ख' को 'र' लिखना।

- उसके लेखन कार्य में समन्वय की कमी रहती है।
- ऐसे छात्र अपने विचारों को लिपिबद्ध करते समय अक्सर गलत शब्दों का प्रयोग कर बैठते हैं।
- लेखन कार्य स्वयं लिखना की गति धीमी होना।  
कहीं से देख कर के लिखने में

- लिखित कार्य में ढेर सारी त्रुटि पायी जाती है।
- अक्षरों को लिखते वक्त अनियमित रूप प्रदान करना  
उदा.- ' ' की जगह ' ' लिखना।

'इवल' को बीच वाक्य में 'Bवल' लिख देना। इत्यादि

- अक्षरों को लिखते वक्त (इंतहपद) का ध्यान न रखना।  
उदा.-

म

a b c d e f  
i j k l m n o p q  
r s t u v w x  
y z A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z

लिखना जिसमें एक वर्ण ' ' इंतहपद से बाहर लिखा गया है।

- लिखते वक्त शब्दों को टेढ़ा-मेढ़ा लिखना, लकीर/रेखा के उपर तो कभी रेखा के नीचे लिखना।

म पे चसंल  
हवपदह जव

- लिखते वक्त स्पेलिंग में अशुद्धता बरतना।
- लिखते वक्त कलम को अलग ढंग से पकड़ना।
- लिखते वक्त कॉपी पर अत्याधिक झुक जाना।
- लिखते वक्त अक्सर उगलियों/हाथ में दर्द की शिकायत करना।

### ❖ डिस्ग्राफिया के प्रकार :-

कई मनोवैज्ञानिक की माने तो वे डिस्ग्राफिया -(लेखन संबंधी अक्षमता) को भी तीन मुख्य प्रकारों में विभेदित करते हैं। ये विभेदीकरण लिखने में होने वाली मुख्य गलतियों पर आधारित है। इसके मुख्य प्रकार निम्न हैं :-

➤ स्थानिक डिस्ग्राफिया- इस अक्षमता से ग्रसित छात्र लिखते वक्त स्थान संबंधी त्रुटि करते हैं। अर्थात् लिखते वक्त अक्षरों, शब्दों के स्थान में हेर-फेर कर देते हैं। उदा. :-

- लाइन के उपर-नीचे लिखने संबंधी त्रुटि।
- मार्जिन के अंदर-बाहर लिखने संबंधी त्रुटि।

- लिखते वक्त शब्दों व वाक्यों में समान अंतराल न रख पाने की त्रुटि।
- टेढ़ा-मेढ़ा लिखना इत्यादि।
- **पठन-लेखन विकार :-** इस अक्षमता से ग्रसित छात्र आमतौर पर लिखते वक्त स्पेलिंग संबंधी गलती करता है।
- **गत्यात्मक लेखन विकार:-** इस तरह के विकार सूक्ष्म, गतिप्रेरक कौशल से संबंधित है। इस अक्षमता से ग्रसित छात्र का लेखन कार्य स्पष्ट नहीं होता। वह लिखते वक्त कलम को सही रूप से पकड़ नहीं पाता जिसके कारण उसकी लिखावट अस्पष्ट व भद्दी लगती है।
- ❖ **क्लेचीप/डिस्फेजिया :-** यह शब्द डिस्फेजिया का शाब्दिक अर्थ होता है वाक् अक्षमता। वास्तव में यह एक वाक् (चममबी) एवं भाषा संबंधी अक्षमता है जिसमें छात्रों/बच्चे को मौजिलक बोली गयी भाषा को समझने व बोलने में कठिनाई होती है। इससे पिड़ित छात्र अक्सर बोली हुयी भाषा/शब्दों का अर्थ नहीं समझ पाते। ऐसे अक्षम बच्चों को दो तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है –द्विभाषा को ग्रहण करने संबंधी समस्याइद्विभाषा की अभिव्यक्ति संबंधी समस्या।

#### ➤ सामान्य लक्षण/ विशेषताएं :-

- ऐसे बच्चे बोले गये शब्दों में भेद नहीं कर पाते।
- उन्हें बोले गये वाक्यों की व्याकरण समझ नहीं आती है और वे अक्सर व्याकरण संबंधी अशुद्धता कर बैठते हैं।
- ऐसे बच्चों में शब्द निर्माण सामर्थ में कमी होती है।
- ऐसे बच्चों से भाषा में संबंधित चिन्हों को समझने की क्षमता कम होती है।
- ऐसे बच्चों में भाषा की अभिव्यक्ति एवं व्याख्या करने की क्षमता का अभाव होता है।
- उन्हें शब्दों और वाक्यों को स्थिति के अनुसार इस्तेमाल करने में कठिनाई होती है।
- ऐसे बच्चे आयद कलेदवगपं- शब्दों को ढूँढने/प्रयोग करने, की भी समस्या से ग्रसित होते हैं।
- ऐसे बच्चे शब्दों को अलग अंदाज में प्रस्तुत करने व भारी आवाज की समस्या से भी जूझ सकते हैं। (उदा.- बोलते वक्त जीभ का बीच में आना, आवाज में भारीपन होना। इत्यादि)
- ऐसे बच्चों में वाक् शक्ति का आभाव पाया जाता है।

#### उपचारात्मक तकनीक :-

- ऐसे बालको में भाषा विकास हेतु उनकी मौखिक अभिव्यक्ति पर ध्यान देना चाहिए। उनसे विचारों को बोलकर अभिव्यक्त करने को कहना चाहिए।
- ऐसे छात्रों के लिए स्व-वार्ता भी लाभकारी हो सकती है।
- खुद से बात करना व स्वयं की क्रियाओं का शाब्दिक वर्णन भी ऐसे बच्चों के लिये लाभकारी होता है।
- शिक्षा के सामन खड़े होकर बोलना – भी ऐसे बच्चों को शब्दों को सही तरह से पकड़ने व उन्हें दोहराने में मदद कर सकता है।
- मस्तिष्क में क्षति ऐसी अक्षमता का प्रमुख कारण माना जाता है, जो कि एक गंभीर कारण है व उसका पूर्ण इलाज संभव नहीं, परन्तु उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर लाभ संभव है।

**क्लेचतंगपं/डिस्प्रेक्सिया :-** इस प्रकार की अक्षमता में शारीरिक क्रियाओं की योजना व उनका संचालन प्रभावित होते हैं। कहा जाता है कि यह अक्षमता लड़कियों से ज्यादा लड़कों में पायी जाती है।

आमतौर पर यह अनुवांशिकी कारणों से होती है। इस अक्षमता के लक्षण बचपन से ही दिखाई देने लगते हैं। इस अक्षमता से ग्रसित बच्चे पियम उवजवत मलम बववतकपदंजपवदमें भी कठिनाई महसूस करते हैं। उदा.— कैंची पकड़ना व चलाना, आर्ट के बटन लगाना, जूतों की लेस (बंध) बाँधना, चित्र बनाना इत्यादि।

### 1.11 **अन्य अधिगम अक्षमताएं**

#### ● **चिंतन व तार्किक योग्यता संबंधी अक्षमताएं :—**

अधिगम प्रक्रिया में चिंतन व तार्किक योग्यताएं महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करती हैं। आमतौर पर अधिगम अक्षम बालक इन योग्यताओं से अछूते रहते हैं। या फिर ये योग्यताएं उनमें निम्न या नगण्य रहती हैं।

- अभी तक हम अधिगम अक्षम बच्चों के ऐसे प्रकारों को जान चुके हैं जिसमें वे अधिगम से संबंधित किसी एक क्षेत्र में (गणित, बोलने लिखने, पढ़ने इत्यादि) आंशिक रूप से अक्षम होते हैं। पर ऐसे बच्चों के कुछ प्रकार ऐसे भी हैं जिनमें बच्चा पूर्ण रूप से अक्षम होता है। यद्यपि ऐसे बच्चों की संख्या बहुत कम होती है पर फिर भी इनकी उपस्थिति को नकारा नहीं जा सकता।

निम्नलिखित अक्षमताओं के पीछे मुख्यतः न्युरोलोजिकल कारक या मस्तिष्क की क्षति का होना माना जाता है

- **हस्तचीपं/एग्राफिया:**—लेखन सामर्थ्य का पूर्ण आभाव।
- **बंसबनसपं/ऐकैलकुलिया:**— गणितीय कौशल का पूर्ण आभाव।
- **चतंगपं/एप्रेकसिया:**—ऐसे बच्चों में सूक्ष्म गामक कौशलों के इस्तेमाल का पूर्ण आभाव देखने को मिलता है।
- **समगपं/एलेक्सिया:**— पढ़ने की क्षमता का पूर्ण आभाव।
- **चीपं/एफेजिया:**— यह ऐसे अक्षमता है जिसमें भाषा अभिव्यक्ति एवं व्याख्या करने की क्षमता का पूर्ण अभाव रहता है।

### 1.12 **अधिगम अक्षम बच्चों को पढ़ाने की प्रविधियाँ**

अधिगम अक्षमता पर कार्य करते हुए शिक्षाविदों ने पाया की निम्नलिखित तकनीक अधिगम अक्षम बच्चों के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकती हैं।

**संज्ञानात्मक प्रशिक्षण उपागम :**—इस तरह का प्रशिक्षण अधिगम अक्षम बच्चों को आंतरिक व्यवहार व सोच को बदलने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। अधिगम अक्षम बच्चों में बोधात्मक कौशल की कमी होती है। ऐसे बच्चों को अपनी आस-पास की चीजों को समझने व उन्हें व्यवस्थित रखने में कठिनाई होती है। संज्ञात्मक प्रशिक्षण ऐसे बच्चों को अपनी सोच व व्यवहार को बदलने में मदद करता है। अधिगम अक्षम बच्चों को संज्ञानात्मक प्रशिक्षण देने हेतु निम्न का प्रयोग किया जा सकता है :—

- **आत्म निरीक्षण**—इसके तहत अधिगम अक्षम बच्चा अपनी प्रगति का आंकलन खुद करना सीखता है व साथ ही उसे ऐसा प्रशिक्षण भी दिया जाता है कि वह अपनी कमियों से निजात पा सके।
- **कनपकमक दवजमे(निर्दीत टिप्पणी)**— यह एक प्रकार के संबंधित शिक्षक द्वारा तैयार किये गये दवजमे होते हैं जिन्हें शिक्षक, बच्चों की मदद के लिए तैयार करता है। इन दवजमे में शिक्षक कक्षा में पढ़ाई गयी पाठ्यपुस्तक को कमवार प्रस्तुत करता है तथा सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को समाहित करता है। इन नोट्स में वर्कशीट की ही भाँति छात्र को लिखने के लिये या टिप्पणी करने के लिये स्थान दिया रहता है। यह विधि अधिगम अक्षम बच्चों के लिये लाभदायक सिद्ध होती है।
- **मेमोरी एण्ड्स (निमोनिक उपकरण)**—इनका इस्तेमाल अधिगम अक्षम बच्चों को कठिन पाठ्य सामग्री को आसानी से स्मृति में संजोने में मदद करता है। निमोनिक उपकरण के तहत बच्चा

किल ठ पाठ्य-सामग्री को युक्ति द्वारा एक छोटा तथा विशेष नाम दे देता है, जो कि उस किल ठ व लंबी पाठ्य-सामग्री का सूचक हो।

**उदा. :-** इंद्रधनुश के रंगों को एक विशिष्ट क्रम में याद रखने के लिए टपटल्लू का प्रयोग। इस शब्द के इस्तेमाल से बच्चा आसानी से इंद्रधनुषीय रंगों को लंबी अवधि तक अपनी स्मृति में संजोसकता है।

इन निमोनिक उपकरणों को स्मृति बढ़ाने वाले उपकरणों के नाम से भी जाना जाता है।

- **बहु-संवेदी उपागम :-**जैसा की नाम से ही प्रतीत हो रहा है कि यह उपागम बच्चों को विभिन्न इंद्रियों के उपयोग पर बल देता है। ऐसा माना जाता है कि इंद्रियाँ ही ज्ञान के स्रोत हैं। किसी भी बात को सीखने में हम जितनीज्यादा इंद्रियों का प्रयोग करेंगे, वह बात हमें उतनी ही जल्दी व बेहतर याद रहेगी। इसी की तर्जपर बहु-संवेदी उपागमका प्रयोग किया जाता है।यह उपागम बच्चों को कुछ भी सिखाने में भट।ज्ञ केउपयोग की सलाह देते हैं। (तपेनस/दृश्य, नकपव/श्रव्य, ज्ञपदमेजीमजपव/शारीरिक संबंधी/करके देखना व ज्वजपसम/छू कर देखना)
- उदा. :-** अगर शिक्षक बच्चों को "भा 11" के तहत कुछ सिखाना चाहते हैं तो शिक्षक को चाहिए कि वह उस नये "शब्द" से पहले बच्चों को अवगत कराये, उस शब्द को बच्चे को दिखाये, फिर सुनाये – (बोलकर), बुलवाये, दोहराने को कहें और फिर उस शब्द के आस-पास बुने हुए अनुभवों को देखे, महसूस करे। ऐसा करने से, बच्चे के विभिन्न इंद्रियों का उपयोग होगा, जो उसे उस बात को लंबी अवधि तक रखने में सहायता करेंगी।
- **ब्वचमतंजपअम समंतदपदह/सहयोगपूर्णअधिगम :-** इस प्रकार के उपागम की विशेषता यह है कि इसमें विभिन्न योग्यता वाले बच्चों को एक साथ बैठाया जाता है। यह बच्चे सामान्य बच्चे व अक्षम भी हो सकते हैं। इस प्रकार के उपागम में बच्चे अपने विभिन्न साथियों के साथ एक साथ बैठकर सीखने का प्रयास करते हैं। अपने हम-उम्र साथियों के साथ मिलकर सीखना, ऐसे बच्चों को किसी भी नवीन बात को सीखने में मदद करता है, व बच्चों में समभाव जागृत करने में सहायक है।
- **पदकअपकनंसपेमक प्देजतनबजपवदंस क्षवहतंसउम/व्यक्तिगत अनुदेशन अभिक्रम :-**यह उपागमअक्षम बालकों को पाठ्यवस्तु को व्यक्तिगत तौर पर सिखाने पर बल देता है। यह सीखने की प्रक्रिया बच्चे की योग्यता व पाठ्यवस्तु को ग्रहण करने की क्षमता पर आधारित है। इस उपागम के तहत अनुदेशन की प्रक्रिया बच्चे की योग्यता पर निर्भर करती है। और बच्चे अपनी क्षमता अनुसार नवीन ज्ञान की ओर अग्रसर होता है। यह उसकी यथाशक्ति पर निर्भर करता है।
- **व्यवहार संशोधन :-**जैसा की नाम से ही विदित हो रहा है, यह उपागम अक्षम बच्चों के व्यवहार को परिमार्जित करने में मदद करता है। यह उपागम मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का पालन करती है। यह उपागम पुर्नबलन के माध्यम से बच्चों को सही व्यवहार व आचरण करना सिखलाता है। बच्चा पुर्नबलन के माध्यम सेअपने व्यवहार में वांछनीय परिमार्जन कर पाने में सक्षम हो पाता है।
- **मनोविश्लेषणात्मक उपागम :-**इस उपागम के तहत बच्चे के व्यवहार का अध्ययन कर उसके अधिगम अक्षम कारणों को ज्ञात करने की कोशिश की जाती है ताकि उन कारणों को जानने के बाद समाधान किया जा सके।
- **औषधीय उपागम/बसपदपबंस चंचतवंबी:-**चिकित्सकीय उपागम यद्यपि यह उपागम सभी तरह के अधिगम अक्षम बच्चों के लिए लाभकारी नहीं है परन्तु कुछ अक्षमताएं जैसे।ब्वए उपदपउंस इतंपद कलेनिदबजपवदए णलचमतंबजपअपजलमें इसने लाभदायक परिणाम दिये हैं। इसउपागम के तहत बच्चों को कुछ विशेष औषधीय देकर उनके(बवदबमदजतंजपवद) -ध्यान को बढ़ानेकी कोशिश की जाती है। परन्तु जहाँ एक ओर औषधीय प्रयोग से ध्यान बढ़ने की संभावना है वहीं दूसरी ओर बच्चा औषधीय व्यसनका आदी भी हो सकता है।

### 1.13 ध्यान योग्य बातें

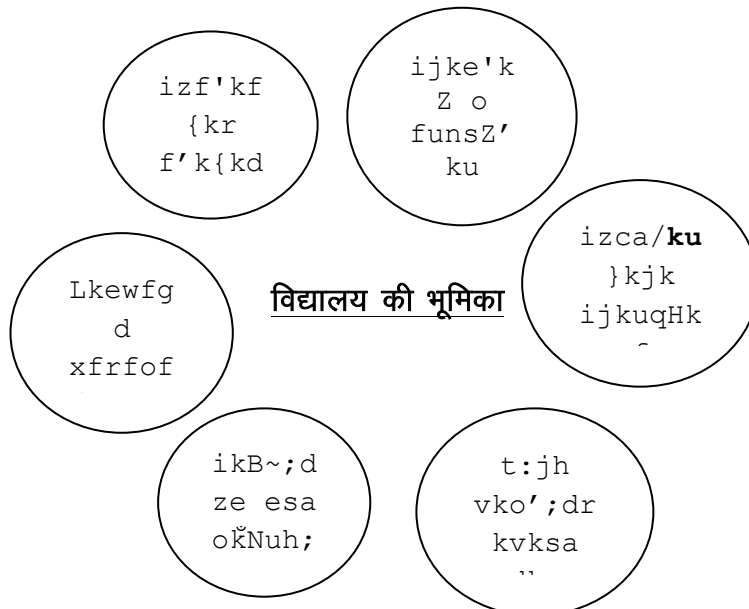
अधिगम अक्षमताग्रस्त बच्चे सामान्य बच्चे के साथ सामान्य वर्ग में ही अध्ययन करते हैं। इसलिए निम्न कौशल क्षेत्र में अगर उन्हें सही प्रशिक्षण दिया जाए तो वे बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।

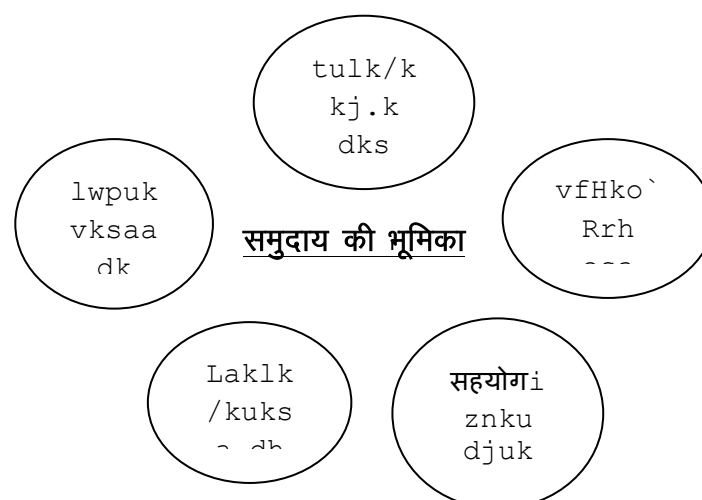
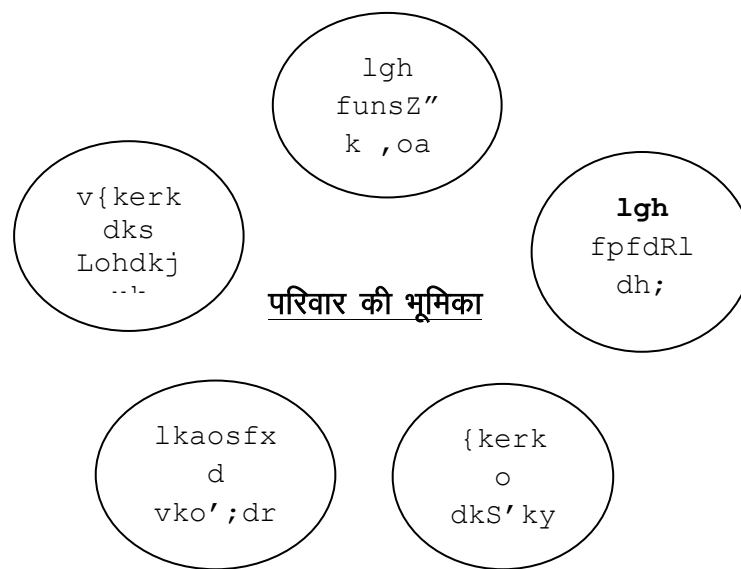
- ❖ ऋतवे डवजवत 'पससे ज्तपदपदह/ सकल गतिप्रेरक कौशल प्रशिक्षण:-इस प्रशिक्षण के तहत बच्चों को शरीर के विभिन्न अंगों के संचालन – जैसे बाँह, टाँग, हाथ एवं पैरों के संचालन का प्रशिक्षण दिया जाता है।
- ❖ थपदम डवजवत 'पससे ज्तपदपदह सूक्ष्म गतिप्रेरक कौशल :-इस तरह का प्रशिक्षण अक्षमताग्रस्त बच्चों के लिए खासी मददगार साबित हो सकता है। इस प्रकार के प्रशिक्षण में उंगलियों व कलाईयों के संचालन का प्रशिक्षण दिया जाता है, जो बच्चों को स्पष्ट लिखने में मदद कर सकता है।
- ❖ 'मसि भसच 'पससे ज्तपदपदह/ स्व सहायता प्रशिक्षण:- इस प्रशिक्षण में उन बातों पर ध्यान दिया जाता है जो कि एक बच्चे को अपनी दैनिक दिनचर्या का काम सुचारु पूर्ण ढंग से करने में मदद करे। जैसे— शरीर की सफाई, कपड़े पहनना, जूते की लेस बाँधना इत्यादि।
- ❖ टपेनस 'पससे ज्तपदपदह/ दृष्टि कौशल प्रशिक्षण:-इस तरह का प्रशिक्षण अधिगम अक्षम बच्चों को वस्तुओं के सही प्रत्यक्षीकरण पर जोर देता है। ऐसा प्रशिक्षण इन बच्चों को यामपट्ट पर लिखी हुयी बातों का सही प्रत्यक्षण कर उन्हें सही लिखने, कॉपी करने, में लाभदायक होता है।
- ❖ नकपजवतल 'पससे ज्तपदपदह/ श्रवणात्मक कौशल प्रशिक्षण:- इस प्रकार का प्रशिक्षण अधिगम अक्षम बच्चों की श्रवणात्मक क्षमता को बढ़ाने का कार्य कर सकता है। बच्चा इसके तहत ध्वनियों में विभिन्नता बरतने, सुने गये शब्दों को लंबे समय तक याद रखने, ध्यानपूर्वक बातों को सुनने में लाभ पा सकता है।
- ❖ 'वबपस 'पससे ज्तपदपदह/ सामाजिक कौशल प्रशिक्षण:-जैसा की नाम से विदित हो रहा है यह प्रशिक्षण बच्चों को सामाजिक गतिविधियों का न्यायोचित ढंग से निर्वहन करने में सहायक हो सकता है। इसके तहत बच्चों को सामूहिक गतिविधियों में ढंग से सम्मिलित होने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

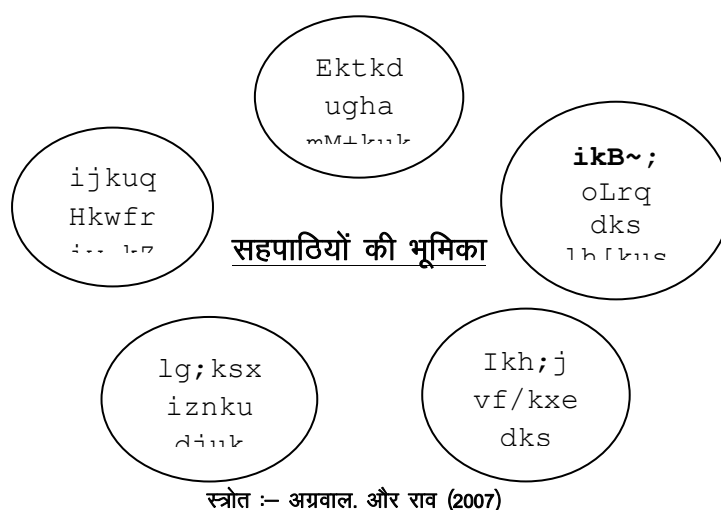
उदाहरण :-बच्चों व बड़े के साथ मर्यादित व्यवहार करना, सामाजिक कार्यक्रम में शरीक लोगों के साथ मेलजोल पूर्ण व्यवहार करना, स्वल्पाहार ग्रहण करना, भोजन करना इत्यादि।

- ❖ बहदपजपअम 'पससे ज्तपदपदह/ संज्ञानात्मक कौशल प्रशिक्षण:-वैसे तो अधिगम अक्षमता को ध्यान में रखते हुए विशिष्ट अक्षमता लिए हुए बच्चे को विशिष्ट संज्ञात्मक कौशल की आवश्यकता होती है फिर भी निम्न बातों का प्रशिक्षण उन्हें लाभ पहुँचा सकता है, जैसे—वस्तुओं का वर्गीकरण, तुलना करना, संबंधों व विभिन्नताओं को पहचानना इत्यादि।

### 1.14 स्टेकहोल्डरस की भूमिका







स्रोत :- अग्रवाल. और राव (2007)

### बेमबा लवनत चतवहतमे/अपनी प्रगति जाँच

7 व र्णीय निकिता कक्षा दूसरी में अध्ययन करती है। वह ाहर के एक बड़े विद्यालय में अध्ययनरत् है। बचपन से ही उसके अभिभावक उसकी परेशानियों से वाकिफ थे क्योंकि उसने हर एक कार्य को देरी से सीखा ( जैसे- चलना, बोलना, इत्यादि।) गुरुआत में उसके द्वारा बोले गये ाब्द इतने अस्प ट होते थे कि उनको ायद ही कोई समझ पाये। निकिता को पढ़ने में काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ता था, उसके शिक्षक हमेशा उसकी शिकायत ही करते रहते। उसे आलसी व कामचोर, पढ़ने से जी चुराने वाली कहते। उसके माता-पिता भी उसकी परेशानियों को जानने के बावजूद भी उससे हताश हो चुके थे।

- ऐसी स्थिति में एक अभिभावक के नाते आपकी क्या भूमिका हो सकती है?

### 1.15 बढ़ते कदम

**yfuZax fMlsfcfyfVt vlksf'k,'ku vkWQ vesjhdK**

1963 ls dk;Zjr~ ;g laLFkk vfHkHkkod] f'k{kd o vf/kxe  
vf/ke cPnksa dks lsok iznku di ioh aSaA



(अल्फा/α टू Ω/ओमेगा)

यह एक ऐसी संस्था है जो सन् 1988 से अधिगम अक्षमता से ग्रसित बच्चों के लिए सेवारथ है। यह संस्था चेन्नई, तमिलनाडू में स्थित है। अनेक बच्चे इस संस्था से लाभ उठाकर राट्रीय ओपन स्कूल से शिक्षा पूरी कर लाभान्वित हुए हैं।

### मद्रास डिस्लेक्सिया असोसिएशन

पिछले लगभग 15 वर्रों से कार्यरत् मद्रास डिस्लेक्सिया असोसियेशन अधिगम क्षमता को दूर करने के लिए प्रयासरत् है।

अभी तक ऐसे कई बच्चे जो कि अधिगम अक्षमता से ग्रसित थे, इस संस्था से लाभ उठा चुके हैं।

### प्रेरणा

33व र्रिय पूर्णिमा चेन्नई स्थित "अल्फा/α टू Ω/ओमेगा" में एक शिक्षिका है। वे भी अधिगम अक्षमता से पीड़ित रह चुकी है। वे बताती हैं कि बचपन में उनके अभिभावक उनकी इस परेशानी से अनभिज्ञ थे, व उनकी समझ में नहीं आता था कि अथक प्रयास व मेहनत के बाद भी पूर्णिमा स्कूल में प्रदर्शन क्यों नहीं कर पाती है? वह अधिगम संबंधित बारिकियों पर ध्यान क्यों नहीं दे पाती वह बार-बार वही गलती क्यों दोहराती है? वह ाब्दों को उल्टा क्यों पढ़ती है? इत्यादि।

पूर्णिमा के ही ाब्दों में उसके शिक्षक उसकी परेशानी नहीं समझ पा रहे थे। वे सब उससे परेशान थे व उसकी समस्या से अनजान। एक दिन अचानक उनके पिताजी ने एक बुक ऑप में अधिगम अक्षमता पर डॉ. बी.वी. हार्नस्बी जो कि लंदन के माने हुए स्पीच थैरापिस्ट थे द्वारा लिखित एक पुस्तक देखी जिसे वे घर ले आये। उसके अध्ययन के उपरांत उनके माता-पिता को समझ में आया कि कहीं उनकी बेटी की समस्या अधिगम अक्षमता तो नहीं?

पूर्णिमा की समस्या समझने के बाद उनके माता-पिता उन्हें लंदन ले गये जहाँ वे बी.वी. हार्नस्बी के अध्ययनशाला में रहीं। डॉ. हार्नस्बी ने उनका अधिगम अक्षमता के लिये परिक्षण किया व पाया कि पूर्णिमा अधिगम अक्षमता से ग्रसित हैं।

खुद पूर्णिमा के ाब्दों में 'डॉ. हार्नस्बी एक बहुत ही ान्त, सरल व समझदार महिला थीं जो कि उनके साथ बड़ा ही सहज बर्ताव करती थीं, उन्होंने मेरे जीवन को नयी शिक्षा दी हार्नस्बी सेंटर में रहकर मैंने नयी दिशा पायी।' पूर्णिमा चेन्नई लौटकर आयीं तो उन्होंने पाया की वे पहले से काफी बेहतर हो गयी हैं। परन्तु कुछ ही समय पश्चात् उन्हें यह समझ में आने लगा कि मुख्य धारा के विद्यालय उनकी समस्याओं को ठीक तरह से नहीं समझ पा रहे हैं व उन्हें वि ायनि ट प्रश्नों के उत्तर परेशान करने लगे। उन्होंने विद्यालय बदलने की सोची और वे बाकी की पढ़ाई के लिए ग्रोवस लर्निंग सेंटर, ंन्न चली गयीं। यह एक ऐसा विद्यालय था जो खास अधिगम अक्षमता बच्चों के लिए ही बना था। इस विद्यालय ने उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ, समाजिक कौशलों से भी परिचित कराया व दैनिक जीवन के कार्य जैसे पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल, बाजार जाकर दैनिक जरूरतों का सामान लाना इत्यादि। शिक्षा पूरी कर वे चेन्नई वापस आ गयीं और अब वे एक नयी पूर्णिमा थीं— एक कान्फीडेंट व सकारात्मक सोच वाली पूर्णिमा। जब वे

वापस लौटी तो उनकी माँ अल्फा/  $\alpha$ टू  $\Omega$ /ओमेगा नामक संस्था की गुरुआत कर चुकी थी— एक ऐसी संस्था जो कि अधिगम अक्षम बच्चों के लिए सराहनीय कार्य कर रही है।

पूर्णिमा अपनी जीवन में आये सकारात्मक बदलाव का श्रेय अपने माता-पिता की लगन, स्नेह व उनके प्रति उनके समर्पित प्रेम को देती हैं। अब वे अपने ही माताजी की संस्था में कार्यरत हैं व अधिगम अक्षमता को जड़ से हटाने के लिये भरसक प्रयास कर रही हैं।

स्रोत. गोयल एस.के. ,2011

- ❖ अधिगम अक्षमता से हमें भयभीत होने की जरूरत नहीं है इसका निवारण संभव है। हमारे सामने पूर्णिमा जी के अलावा कई ऐसे उदाहरण हैं जैसे— टॉम क्रुज, थॉमस एडिसन इत्यादि। जो कि बचपन में अधिगम अक्षमता से पीड़ित थे और आगे चलकर अपनी योग्यता के दम पर वो सारे विश्व में मशहूर हुए।

### 1.16 स्वयं जाँचे

- प्र.1. कैसे बालक को अधिगम अक्षम कहा जाता है?
- प्र.2. अधिगम अक्षमता के नैदानिक परिक्षणों की संक्षिप्त चर्चा करें।
- प्र.3. अगर कोई बालक बार-बार साँखिकीय अंको के जोड़-भाग में त्रुटि करता है तो वह संभवतः.....अक्षमता से ग्रसित है।
- प्र.4. डिस्लैक्सिक बालक को "वर्ण आँध्रता" से ग्रसित कहना कहाँ तक उचित है?
- प्र.5. प्रारंभिक अवस्था में अधिगम अक्षम बालक की जाँच कैसे संभव है? टिप्पणी करें।
- प्र.6. डिस्लैक्सिक, डिस्ग्राफिक व डिस्कैलकुलिक बालकों में अंतर कर उनके उपचारात्मक विधियों की चर्चा करें।

### 1.17 सारांश

- सीखना, व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाता है, पर कई बच्चे ऐसे हैं जो कि काफी धीमी गति से सीखते हैं। विशिष्ट तौर पर ऐसे बच्चे जिन्हें अधिगम सम्बंधी कठिनाई होती है, जो कि उनके अकादमिक (शैक्षिक) उपलब्धि को बाधित करती है, अधिगम अक्षमता कहलाती है।
- अधिगम अक्षम बच्चे देखने में सामान्य बच्चों की ही तरह दिखेंगे, परन्तु वो सामान्य बच्चों से अधिगम के क्षेत्र में इतने ज्यादा पिछड़ जाते हैं, की उन्हें विशेष ध्यान एवं विशेष उपचार के साथ कभी-कभी विशेष पाठ्यक्रम की भी जरूरत महसूस होती है।
- अधिगम अक्षमता के विभिन्न प्रकार होते हैं, जिनमें से डिस्लैक्सिया, डिस्ग्राफिया व डिस्कैलकुलिया प्रमुख हैं।
- अधिगम अक्षमता विभिन्न कारणों से होती है, किन्तु इनमें अनुवांशिकी, जैवकीय व वातावरणीय कारक प्रमुख हैं।
- अधिगम अक्षम बच्चों की पहचान उनके आवेग, ध्यान अवधि में कमी, व्याकुलता, अतिसक्रियता, निर्देशों को पालन न कर पाना एवं सामान्य अकुशलता इत्यादि से की जा सकती है।
- अधिगम अक्षम बच्चों की पहचान हेतु विभिन्न मानक परीक्षण मौजूद हैं, जिनके इस्तेमाल से हम ऐसे बच्चों की पहचान कर सकते हैं।

- अधिगम बच्चों की पहचान कर हमें उन्हें उचित उपचार प्रदान करना चाहिए। इसके लिये जरूरी है कि हम उनकी कमियों का सही आँकलनकर उन्हें विभिन्न उपचारात्मक तकनीकों में से चुनकर उनकी अक्षमता के मुताबिक उपचार प्रदान करें, ताकि वे जल्द-से जल्द अपनी इस अक्षमता से उबर सकें।
- अधिगम अक्षमता में कुछ विशिष्ट उपागम— जैसे व्यवहार, उपागम, बहु-संवेदी उपागम, व्यक्तिगत अनुपदेशन अभिक्रम, न्युमोनिक उपकरण इत्यादि लाभकारी हैं।
- हमारी विद्यालयीन जनसंख्या में से लगभग 8—10 फीसदी आबादी अधिगम अक्षमता से पीड़ित है, इन्हें इस समस्या से उबारने के लिये हम सभी—अभिभावक, सहपाठी, समुदाय व विद्यालय को अपना दायित्व समझते हुए इनकी मदद के लिए आगे आना होगा, तभी हम इस समस्या से जूझ रहे बच्चों की वास्तविक मदद कर सकते हैं।

### त्मितमदबमे नहहमेजमक तंकपदहे/संदर्भ ग्रंथ

।हतूसए ८ – त्वए ठण्टण्णछण ;2007द्ध म्कनबंजपवद वित कपेंइसमक बेपसकतमदए कमसीपएौपचतं च्णइसपबंजपवद  
ठतमबीपदए णए – ज़मउचएँण ;1984द्धण डपेबवदबमचजपवदे इवनज समंतदपदह कपेंइसपजपमे श्रवणतदंस वित्मींइसपजंजपवदए  
50ए 30.34ए

ठतपजपौ क्लेसमगपं ववबपंजपवद ;2002द्ध ठक। भंदकइववाण तंकपदहरु ठक।ए  
बैंकीए । ;1999द्धण । भंदकइववा वित च्णपउंतलैबीववस ज्मबीमते वबिबेपसकतमद पूजी समंतदपदह कपेंइसपजपमेए छमू कमसीपरू  
म्कनबंजपवदंस ब्बदेनसजंदज वित्दिकपं स्पउपजमक  
बेमेपमतए ठण ;1988द्धण ववबपंजपवद वित बीपसकतमद पूजी समंतदपदह कपेंइसपजपमे अवबंजपवदंस बवउउपजजमम  
बवउचसमजमे नतअमल वद स्क केनसजेए ।ब्व छमू ठतपमए छवण 146;5द्धए 20.23ए  
ब्तजपो दक श्रण्चौतमत ;1980द्धए ष्जेम म्कनबंजपवद विसवू समंतदपदह बेपसकतमदए स्वदकवदरू त्वनजसमकहम दक ज़महंद  
चंसए  
वंपक थनसजवद च्णइसपौमतेण च्ममतए स्प दक त्मपकए ळण ;2003द्ध प्दजतवकनबजपवद जव क्लेसमगपं स्वदकवदरू वंपक  
थनसजवद च्णइसपौमतेण त्पककपबाए ठणएँवसमिए श्रण दक स्नउेकवदए क्ण ;2002द्ध क्लेसमगपंरू । च्णबजपबंस ळनपकम  
वित ज्मबीमते दक च्त्तमदजेण  
कमदपंसए च्ण्णए डण्णण श्रंउमे दकँण्ण श्रवीदए ;1996द्धए प्दजतवकनबजपवद जव समंतदपदह कपेंइसपजपमेए छण्णरू ।ससलद  
– ठंबवदए  
कमौसमतए क्णए म्प म्ससपे दक ज़ण स्मद्र ;1996द्धए ज्मबीपदह ।कवसमेबमदजे पूजी समंतदपदह कपेंइसपजपमेरू जतंजमहपमे दक  
डमजीवके ;2दक मकण्णद्धए कमदअमतरू स्वअमण  
ळमंतीमतंज ;1985द्धण समंतदपदह कपेंइसपजपमेरू म्कनबंजपवदंस जतंजमहपमेए ज्पउम ब्बण्ड डवेइल ब्ससमहम च्णइसपौपदहए  
डसए णै।ए  
ळवमसएँण्ण – ठीतहंअं च्ण ;2006द्धण टवबंजपवदंस म्कनबंजपवद वित कपेंइसमकरू जतंपदपदह दक मअंसनंजपवद बमदंतपवण  
प्द ठीतहंअं – ठीतहंअं ;म्केण्ण ।चचतंपेंस वडिवकमतद म्कनबंजपवदए ।हतं रू तीप च्त्तौदए च्च 138.149ए  
ळवमसएँण्ण ;2011द्ध भंदक ठववा विसमंतदपदह कपेंइसपजपमेए ।हतं भ्तचतैक पदेजपजनजम वित्ठीमीअपवनतंस जेनकपमेण

भंससींदए क्ण्णए श्रण्ण ज्ञानाँउिंद दक श्रण्ण स्सलवकए मज संण ;2005द्धए समंतदपदह कपेंइसपजपमे ;3तक मकण्णद्धए ठवेजवदरू  
च्मतेवदए  
भ्मदकमतेवदए ।ए ;1998द्ध डंजी वित जीम क्लेसमगपबरू । च्णबजपबंस ळनपकमण स्वदकवदरू वंपक थनसजवद च्णइसपौमतेण  
ज्ञंलए श्रण दक त्मवए क्ण ;2003द्ध क्लेसमगपं दक डंजीण स्वदकवदरू वंपक थनसजवद च्णइसपौमतेण ज्ञमंजमेए ।ए  
;2002द्ध क्लेसमगपं दक ष्णरू । ळनपकम वित ज्मबीमते दक च्त्तमदजे ;2दक मकदद्धण स्वदकवदरू वंपक थनसजवद  
च्णइसपौमतेण  
ज्ञवीसप ।णै ;1997द्धण ववबपंसैमतअपबमे जव कपेंइसमक छमू कमसीप रू ।दउवस च्णइसपबंजपवदए  
ज्ञतपौदए ठण ठणए वनजजए ठणैण ठण दक त्वए ज़ण्ण ;म्कण्णद्ध ;2001द्धण कपेंइसमक च्मतेवदए छमू कमसीपरू कपेबवअमतल  
च्णइसपौपदह भ्वनेमण  
ज्ञनउंतै ;2008द्ध टपौपीजीपीए च्जंदरू श्रंदाप च्त्तौद  
ज्ञनदकनए ष्ण्ण ;2000द्धणैजंजने वित्कपेंइसपजल पद प्दकपं 2000ए छमू कमसीप रू त्मींइसपजंजपवद ब्वनदबपस वित्दिकपं  
समंतदमतए श्रणए स्मूदजीसए ठण दक स्मउमतएँण ;1995द्धण ।जमदजपवद क्मपिबपज कपेवतकमते रू ।मेउमदज दक ज्मबीपदहण  
ब्सपवितदपं रू ठतववोध्वसम च्णइसपौपदह ब्वउचंदलण

स्मंतदमतए श्रण्ण ;1993ऽद्वए स्मंतदपदह क्पेइपसपजपमेरु जीमवतपमेए क्पेइदवेजपबे दक ज्मबीदपुनमे ;6जी मकण्द्वए ठवेजवदरु भ्वनहीजवद डपसिपदण

स्मंतदमतए श्रण्ण ;2003ऽद्व स्मंतदपदह क्पेइपसपजपमे ;9जी मकदद्वए ठवेजवदए ड।रु भ्वनहीजवद डपसिपदण

स्वदकवदरु क्पेअपक थनसजवद च्नइसपौमतेण सजवदण डण ;1998ऽद्व ज्मबीपदह त्मंकपदह दक चेमससपदह जव क्लेसमगपब

बेपसकतमदण स्वदकवदरु क्पेअपक थनसजवद च्नइसपौमतेण

डंदहंसए ण्ण ;2009ऽद्व स्मंकनबंजपदह माबमचजपवदंस बेपसकतमदण छमू कमसीपए च्म स्मंतदपदह च्त्तपअंजम स्जकण

डमतबमतए ण्ण ;1997ऽद्व ण्ण जनकमदजे पूजी स्मंतदपदह क्पेइपसपजपमे ;5जी मकण्द्वए न्वचमत ककसम त्पअमतए छण्ण

डमततपसध्त्तमदबपजम भ्ससण

डमतबमतए ण्ण ;1991ऽद्व ण्ण जनकमदजे पूजी स्मंतदपदह क्पेइपसपजपमेए छमू त्वता रु डमतपसस च्नइसपौपदह ब्वउचंदलण

डपबीमसेए ण्ण ;मकेण्द्व ;1994ऽद्व ज्तंदेपजपवद जेतजमहपमे थ्वत च्मतेवेदे ण्ण स्मंतदपदह क्पेइपसपजपमेए द क्पमहवए

ब्सपवित्तदपंरु पदहनसंत च्नइसपौपदह हतवनचण

चममतए स्म दक त्मपकए ण्ण ;मकेण्द्व ;2001ऽद्व क्लेसमगपं नबबमेनिस प्दबसनेपवद पद जीम मैमबवदकंतल बीववसण स्वदकवदरु

त्वए ण्ण त दक मैए डण छण ;1995ऽद्व भ्सचपदह जीम क्पेइसमकरु प्दकपंद च्मतेचमबजपअमण छमू कमसीपरु ण्ण च्नइसपौपदह

भ्वनेमण

त्मीइपसपजंजपवद ब्वनदबपस व प्दकपंण प्दवित्तजंजपवद — ण्ण पकंदबम ठववासमज वित च्मतेवेदे पूजी क्पेइपसपजपमेए छमू

कमसीपरु त्मीइपसपजंजपवद ब्वनदबपस व प्दकपंण

इंजपदवए ण्ण डपससमतए स्म दक बीपउपकजए त्प ;1981ऽद्व स्मंतदपदह क्पेइपसपजपमे ण्ण लेजमउप्रपदह ज्मबीपदह दक मैमतअपबम

कमसपअमतलए स्वदकवद रु चेमद लेजमउ ब्वतचवतंजपवदण

ज्वतहमेमदए श्रण्ण ;1985ऽद्व डमउवतल च्त्तवबमेमे पद त्मंकपदह क्पेइसमक बेपसकतमदए श्रवनतदंस व स्मंतदपदह

क्पेइपसपजपमेए 18ए चचण 250.357ण

ज्वतहमेमदए श्रण्ण दक ठण्ण वदह ;मकेण्द्व ;1986ऽद्व स्मंकपदह क्पेइपसपजपमेरु वउम छमू च्मतेचमबजपअमेए छमू त्वतारु

बंकमउपबण

मेजूववकए च्ण ;2004ऽद्व स्मंतदपदह दक स्मंतदपदह क्पेअपक थनसजवद च्नइसपौमतेण

ववकूंतकए डण दक च्मजमतेए श्रण्ण ;1983ऽद्व जीम स्मंतदपदह क्पेइसमक कवसमेबमदजरु स्मंतदपदह नबबमे पद ब्वदजमदज तमेए

स्वदकवद रु चेमद लेजमउ ब्वतचवतंजपवदण

नहए म्ण दक म्मैमउमस ;1984ऽद्व स्दहनंहमे मेउमदज दक प्दजमतअमदजपवद वित जीम स्मंतदपदह क्पेइसमक ;2दक मकण्द्वए

ब्वसनउइनेए ण्ण डमततपसण